5 अप्रेल 2023
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

समरसता के वाहक

मालवा में बाबासाहेब अंबेडकर जी की जन्मभूमि है तो भगवान परशुराम जी की भी।
मालवा में गोगादेव की छड़ी पूजन में भी सम्पूर्ण समाज सम्मिलित होता है,
वास्तविकता में मालवा समरसता का वाहक है।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

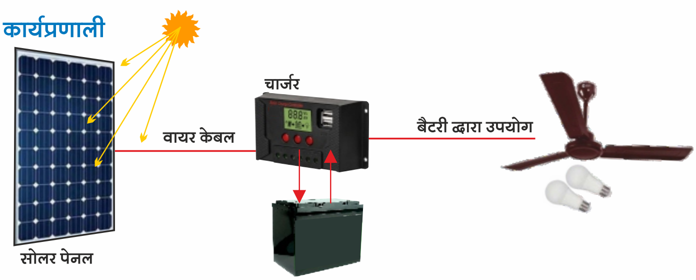

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500

ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 मार्च 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 02 अंक : 10
वैशाख/कृष्ण
युगाब्द ५१२५

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी–1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए–11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी–1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731–3551341

अपनी बात

ॐ

समाज में समता और समरसता नहीं होने से इतिहास में भारतवर्ष को पराजय का सामना करना पड़ा है। इसे दृष्टिगत रखते हुए अब हमें उन भूलों को दोहराना नहीं चाहिये। समता ऊपरी एवं भौतिक समानता का शब्द है जबकि समरसता आन्तरिक है। हम सब भौतिक रूप से अर्थात् देखने में समान हों या ना हों, हमारा सोच चिन्तन एक जैसा हो तो हम समरस समाज का निर्माण कर पायेंगे। हमारी सांस्कृतिक विरासत, हमारे महापुरूष, हमारी सनातन संस्कृति, हमारा गौरवशाली इतिहास, हमारा राष्ट्रीय चिन्तन सभी के मन में एक जैसा होगा तो एक समरस और सबल समाज बनाने में हम सफल होंगे।

आज भी समरसता की कमी से महा षड्यंत्रकारी शक्तियां समाज को बांटने और देश को तोड़ने का कुत्सित प्रयास कर रही हैं। उनके इस षड्यंत्र को विफल करने के लिए समरस समाज में संगठित करना अतिआवश्यक है। आज भी हिन्दू समाज जाति-बिरादरी, ऊँच-नीच तथा क्षेत्रीयता में विभाजित हो रहा है। अगड़े-पिछड़े के भेद खड़े किये जा रहे हैं। इन सब भेदों को समाप्त करने के लिए समरस समाज का खड़ा होना अत्यन्त आवश्यक है।

राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है कि समाज सजग और सुसंगठित रहे।

जैसे हमारे शरीर के सभी अंग सुचारू रूप से अपना-अपना कार्य करते हैं और हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, उसी प्रकार इस राष्ट्र को स्वस्थ और वैभवशाली बनाने के लिए संपूर्ण समाज को समरस रहकर कार्य करना होगा।

एक समरस और सुसंगठित समाज ही अपने भारतवर्ष को पुनः वैभवशाली और शक्ति संपन्न बना सकता है। आइये हम सभी जाति-पंथ, अगड़ा-पिछड़ा, ऊंच-नीच का भाव मिटाकर भारतमाता को विश्व गुरू के पद पर आसीन करें।

अलग-अलग बहती सरिताएं
मिलकर बनता सिन्धु है।
जाति पंथ है एक व्यवस्था
खून रगों में हिन्दू है।।

मालवा के अमर सपूत- समरसता संदेशवाहक डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर

डॉ. सुब्रतो गुहा

मालव भूमि पुण्यभूमि भारत का सदैव ही एक पुण्य और समृद्ध अंश रहा है- इसी संपन्नता का बखान करते हुए कहा गया है- **''मालव भूमि धीर गंभीर, पग पग रोटी, डग डग नीर।''**

प्राचीनकाल से ही आर्थिक एवं सांस्कृतिक संपन्नता के साथ-साथ मालव भूमि सामाजिक समरसता का सुप्रसिद्ध उदाहरण रहा है। इसी मालव भूमि के महू नगर में 14 अप्रैल 1841 को एक अति विलक्षण बुद्धि वाले बालक का जन्म हुआ। पिता रामजी सकपाल तथा माता भीमाबाई ने स्नेहपूर्वक बालक का नाम रखा भीमराव। बालक भीमराव को बचपन से ही अनेक प्रकार के भेदभाव का शिकार होना पड़ा क्योंकि वे महार जाति के थे और उस युग में महार जाति के नर-नारी अछूत माने जाते थे। सामाजिक कुरीति छुआछूत भारत के सभी हिस्सों में थी, तभी तो जब 1894 में महू में अपनी सेना की नौकरी से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर महाराष्ट्र के सतारा शहर पहुँचे और स्टोरकीपर की नौकरी करते हुए वहीं बस गए तब महू नगरी की पुरानी यादें भले ही पीछे छूट गईं। छुआछूत रूपी सामाजिक अभिशाप ने उनका एवं उनके बालक भीमराव का पीछा नहीं छोड़ा।

अत्यधिक बुद्धिमान बालक भीमराव को विद्यालय की कक्षा में अन्य विद्यार्थियों से अलग टाट बिछाकर बैठना पड़ता, प्यास लगने पर चपरासी बालक को छुए बिना उसके हाथ में ऊपर से पानी डालता, जिस दिन चपरासी छुट्टी पर रहता उस दिन बालक भीमराव को पूरे दिन विद्यालय में प्यासा ही रहना पड़ता। सन् 1900 में जब बालक भीमराव को सतारा के शासकीय माध्यमिक विद्यालय में प्रवेश मिला तब निर्धनता के कारण बालक भीमराव पैदल ही विद्यालय जाते थे। एक दिन अत्यधिक थकान के कारण बालक भीमराव पैदल नहीं चल पा रहे थे इसलिए एक बैलगाड़ी में बैठ गए। थोड़ी देर बाद चालक को पता चला कि वह बालक महार जाति का है तो उसने अछूत कहते हुए बालक को नीचे धकेल दिया जिससे बालक के कपड़े कीचड़ से गन्दे हो गए। उस दिन कीचड़ बालक भीमराव के दामन पर नहीं, बल्कि समरसता विहीन तत्कालीन रूढ़िवादी समाज के दामन पर लगा था। बालक भीमराव की बुद्धिमत्ता और सरल स्वभाव से प्रभावित होकर उस विद्यालय के एक ब्राह्मण शिक्षक महादेव अंबेडकर ने स्नेहपूर्वक विद्यालय के रिकार्ड में उनका नाम भीमराव सकपाल से बदलकर भीमराव अंबेडकर कर दिया। इसके बाद भीमराव निरन्तर उन्नति के पथ पर चलते रहे। उच्च अंकों के साथ 1907 में मैट्रिक, 1910 में इन्टरमीडिएट तथा 1912 में बी.ए. डिग्री अर्जित करने के बार बरोड़ा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ से आर्थिक सहायता प्राप्त कर अमेरिका गए तथा एम.ए. एवं पी.एच.डी. की उच्च योग्यता अर्जित की। भारत लौटकर पहले मुंबई के सिडेनहम महाविद्यालय में प्राध्यापक बने तथा 1923 में मुंबई उच्च न्यायालय में बैरिस्टर के रूप में आपने वकालत का पेशा प्रारंभ किया।

डॉ भीमराव अंबेडकर भारत में राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में एक सम्मानित व्यक्ति शीघ्र ही बन गए। सन् 1931 में वे गांधी जी के साथ ब्रिटिश सरकार से वार्ता हेतु लंदन गोलमेज सम्मेलन में सहयोगी बने। साथ ही सामाजिक समरसता हेतु उन्होंने सन् 1920 में ''मूकनायक'' नामक मराठी पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया तथा 1924 में मुंबई में ही बहिष्कृत हितकारिणी सभा नामक सामाजिक संगठन की स्थापना की।

सामाजिक समरसता की व्यावहारिक व्यवस्था करने वाले पूज्य बाबासाहेब दलितों के लिए अलग मंदिरों के निर्माण की मांग नहीं करते थे बल्कि उनकी मांग थी कि सभी वर्तमान समय के मंदिरों में सवर्ण-दलित-आदिवासी, नर-नारी एक साथ

प्रवेश कर पूजा-पाठ करें ताकि समरसता से परिपूर्ण एक शक्तिशाली हिन्दू समाज का सपना साकार हो, सिर ऊँचा कर प्रत्येक जाति के नर-नारी आपसी भेदभाव भुलाकर सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें। दिनांक 2 मार्च 1930 को नासिक शहर के सुप्रसिद्ध कालाराम मंदिर में दलित बंधुओं को प्रवेश दिलवाने के सफल आन्दोलन का नेतृत्व पूज्य बाबासाहेब ने ही किया था। जिसके फलस्वरूप सन् 1935 में इस हेतु कानून बनवाने में सफल रहे। सन् 1927 में महाराष्ट्र के महाड में दलितों के लिए तालाब का पानी पीने के अधिकार हेतु उन्होंने सफल अभियान चलाया। हिन्दू समाज में पूर्ण सामाजिक समरसता के लिए हमेशा काम करने वाले पूज्य बाबासाहेब ने सन् 1932 में ब्रिटिश सरकार के कम्यूनल अवार्ड नीति का घोर विरोध किया-क्योंकि इसमें दलितों को हिन्दू समाज से अलग करने के षड्यंत्र के अंतर्गत दलितों के लिए अलग निर्वाचन मंडल की व्यवस्था की गई थी- जिसमें उम्मीदवार और मतदाता केवल दलित ही हो सकते थे।

पूज्य बाबासाहेब अंबेडकर के जीवन की घटनाएँ इस सत्य को उजागर करती हैं कि वे मूलतः हिन्दू धर्म के विरोधी नहीं थे बल्कि हिन्दू समाज में फैली छुआछूत एवं अन्य कुरीतियों के विरोधी थे जिनका समर्थन या उल्लेख हिन्दू धर्मग्रंथों में भी नहीं है। जातिगत भेदभाव या छुआछूत का समर्थन कोई हिन्दू धार्मिक ग्रंथ नहीं करता। धर्मग्रन्थ पुराणों में वर्णन हैं कि शूद्र माता की संतान महीदास ने ऐतरेय ब्राह्मण समूह की स्थापना की जिसके आज भी भारत में लाखों अनुयायी हैं। हिन्दू धर्मग्रन्थ उपनिषद में उल्लेख है कि पिता का परिचय न होने के बावजूद जाबाल को महापंडित के रूप में सम्मान मिला। हिन्दू समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए ही स्वतंत्र भारत के कानून मंत्री के रूप में पूज्य बाबासाहेब ने 1955 के हिन्दू कोड बिल के माध्यम से समस्त जातियों के हिन्दुओं के लिए समान अधिकारों का कानूनी प्रावधान किया।

संविधान निर्माता भारतरत्न पूज्य बाबासाहेब भले ही 6 दिसंबर 1956 को इस भौतिक संसार से विदा हो गए तथापि उनकी जन्म जयंती 14 अप्रैल के अवसर पर समस्त भारतवासी विशेष रूप से उनकी जन्मस्थली मालवा के हम मालवावासी कृतज्ञतापूर्वक उस महामानव का स्मरण करते हैं- इन पंक्तियों के साथ

''आप तो चले गए हैं लेकिन,
स्मृति शेष हृदय आँगन में,
तुलसी क्यारे दीप जलाते,
अंकित सूरत भोली आंखन में।''

विष ऐसे घोला जाता है

अमन व्यास

द इंडियन एक्सप्रेस के अंग्रेजी और मराठी संस्करण में गुड़ी पड़वा के उपलक्ष्य में पीएनजी ज्वेलर्स का विज्ञापन आया, जिसमें अभिनेत्री माधुरी दीक्षित मॉडल हैं। विज्ञापन का समाचार पत्र, विज्ञापन प्रदाता ब्रांड, मॉडल और उपलक्ष्य सब एक हैं......लेकिन मराठी संस्करण में माधुरी ने बिंदी लगा रखी है और अंग्रेजी में नहीं....आखिर क्यों???

क्या अंग्रेजी पढ़ लेने वाली पीढ़ी, अपने शुभ प्रतीकों को हीन भावना से देखे, इस हेतु उन्हें प्रेरित करने के लिए?

या अंग्रेजी इतनी उच्चतर है कि उसके सामने ये शुभ प्रतीक स्वतः हीन हो जाते हैं?

चूंकि आने वाली पूरी पीढ़ी, अंग्रेजी बोलने वाली होगी और अंग्रेजी बोलने वाली पीढ़ी जब ऐसे विज्ञापन देखेगी और केवल विज्ञापन नहीं बल्कि धारावाहिकों, फिल्मों, नाटकों, रील्स में जब अंग्रेजी बोलते नायक -नायिकाओं को पश्चिम का अनुकरण करते देखेंगी, तो उन्हीं का अनुकरण करेगी न......

लंदन जाकर आने का असर तो जेठालाल के दिमाग से दो महीने नहीं निकलता और अब तो लंदन वाले ही भारत में कंपनियों, संस्थाओं, समाचारों के रूप में प्रतिष्ठित हो गए हैं और इतिहास साक्षी है ईस्ट इंडिया कंपनी आती व्यापार के लिए है....पर करती शासन है।

इसका एक ही हल है...भावी पीढ़ी को अपने प्रतीकों की वैज्ञानिकता, उत्सवों के कारण इत्यादि से परिचय कराएं।

इस धीमे जहर से बचिए.... बचाइए।

पूज्य आद्य शंकराचार्य

पूज्य आदि शंकराचार्य भारत के महान दार्शनिक एवं धर्मप्रवर्तक थे। उन्होंने अद्वैत वेदान्त को ठोस आधार प्रदान किया। श्रीमद् भगवद्गीता, उपनिषदों और वेदांतसूत्रों पर लिखी हुई इनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

आदि शंकराचार्य ने संपूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण किया और भारत के चारों कोनों में चार मठों की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध एवं पवित्र माने जाते हैं। पूज्य आद्य शंकराचार्य का जन्म वर्तमान केरल प्रान्त के कालड़ी नामक स्थान पर हुआ था। कुछ सम्प्रदायों में आदि शंकराचार्य को शिव का अवतार माना जाता है।

आदि शंकराचार्य ने मालवा प्रान्त के ओंकारेश्वर में तत्कालीन समय के प्रकाण्ड विद्वान मण्डन मिश्र के साथ शास्त्रार्थ किया था और उस शास्त्रार्थ में मण्डन मिश्र को पराजित किया था। अपने पति को हारता देख मण्डन मिश्र की पत्नी भारती ने शास्त्रार्थ में हस्तक्षेप करते हुए उनसे कामशास्त्र पर शास्त्रार्थ करना प्रारंभ कर दिया। आचार्य शंकर बाल-ब्रह्मचारी थे अतः कामशास्त्र के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सके। तब उन्होंने भारती से कुछ समय माँगा तथा परकाया प्रवेश कर उस विषय की जानकारी प्राप्त की फिर पुनः भारती से शास्त्रार्थ कर उसे परास्त किया।

आचार्य शंकर ऐसे महासागर थे जिसमें सभी वेदों, उपनिषदों, गीता का ज्ञान सम्मिलित था।

भगवान महावीर

भगवान महावीर की निर्वाण प्राप्ति के 2550 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। उन्होंने कार्तिक अमावस्या के दिन अष्टकर्मों का नाश करके निर्वाण प्राप्त किया था। जनमानस को ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जानी वाली इस दिव्य विभूति ने आत्मकल्याण तथा समाज कल्याण में अपने जीवन को समर्पित कर मानवता पर परम उपकार किया। मानवता के कल्याण को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के रूप में पाँच सूत्र दिए थे, जिनकी सार्वकालिक प्रासंगिकता है। भगवान महावीर ने नारीशक्ति को सम्मानजनक स्थान प्रदान करते हुए उन्हें खोया हुआ गौरव लौटा कर समाज में लैंगिक भेदभाव मिटाने का युगांतरकारी कार्य किया।

अपरिग्रह के संदेश से उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को सीमित करते हुए संयमपूर्ण जीवन जीने तथा अपनी अतिरिक्त आय को समाज के हित में समर्पित करने की समाज को दिशा दी। हमारी वर्तमान जीवन शैली से पर्यावरण को हो रही हानि से उसे बचाने में अपरिग्रह का सूत्र बहुत महत्वपूर्ण है। अहिंसा, सह-अस्तित्व और प्राणिमात्र में समान आत्मतत्व के दर्शन करने की उनकी शिक्षा का अनुपालन विश्व के अस्तित्व के लिए परम आवश्यक है। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित कर्म सिद्धांत में अपने कष्टों और दुःखों के लिए दूसरों को उत्तरदायी ठहराने से बचने तथा अपने कर्म को ही कर्ता के सुख-दुःख का कारण मानने का सन्देश निहित है।

स्यादवाद

भगवान महावीर का एक प्रमुख सन्देश है। अनेक प्रकार के द्वन्द्वों से पीड़ित मानवता को बचाने तथा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए स्यादवाद आधार बन सकता है।

भगत सिंह के प्रेरणा पुरुष थे वीर सावरकर...

स्वातंत्र्य वीर सावरकर पर कांग्रेस के नेता और वामपंथी अनर्गल आरोप लगाते रहते हैं। कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने वीर सावरकर पर फिर टिप्पणी की है। आरोप लगाने वाले वीर सावरकर के योगदान को या तो जानते नहीं हैं, या फिर जानबूझकर नकार देते हैं। वीर सावरकर क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत थे। पढ़ें पाञ्चजन्य के आर्काइव से लिया गया यह लेख। वीर सावरकर और भगत सिंह का रिश्ता बेहद प्रगाढ़ था । सशस्त्र क्रांति द्वारा भारतीय स्वातंत्र्य की प्राप्ति, भारत को धार्मिक नहीं अपितु विज्ञान की नींव पर खड़ा करना, मुस्लिम अलगाव के खतरे को पहचानने जैसे अनेकों विचारों में दोनों में समानता पाई जाती है। सत्य व तथ्य परखे बगैर, जरूरत पड़े तो उसे मरोड़कर भी सावरकर तथा राष्ट्रीय विचारधारा का विरोध करना मात्र है। स्पष्ट रूप से देखें तो सावरकर साहित्य व विचारों का अध्ययन किए बगैर, जो सावरकर ने कभी कहा ही नहीं, वह सावरकर पर लादकर जो सावरकर ने किया उसे नजरअंदाज कर, केवल अपना संकुचित स्वार्थ साधने हेतु यह विकृत टीका-टिप्पणी की जाती है। उसके चलते भगत सिंह को साम्यवाद के खेमे में खड़ा किया जाता है और सावरकर से उनका रिश्ता नकारा जाता है। आश्चर्य की बात यह है कि भारत में वामपंथी विचारधारा के पुरोधा रहे मानवेन्द्रनाथ राय, कामरेड डांगे आदि नेतागण सावरकर को अपना प्रेरणापुरुष मानते थे और वैसा जाहिर तौर पर प्रकट भी करते थे। इतना ही नहीं जिस लेनिन की ये लोग दुहाई देते रहते हैं, वह भी वीर सावरकर कि क्रांतिकारी गतिविधियों के पक्षधर थे। लेकिन वास्तविक इतिहास स्वीकारना इन्हें नहीं भाता है इसलिए ये मनगढ़ंत इतिहास रचते हैं। ऐसे समय पर भगत सिंह के प्रमुख प्रेरणापुरुष रहे वीर सावरकर और भगत सिंह के ऐतिहासिक संबंधों को उजागर करना आवश्यक होगा। वीर सावरकर और भगत सिंह का रिश्ता बेहद प्रगाढ़ था। सशस्त्र क्रांति द्वारा भारतीय स्वातंत्र्य की प्राप्ति, भारत को धार्मिक नहीं अपितु विज्ञान की नींव पर खड़ा करना, मुस्लिम अलगाव के खतरे को पहचानने जैसे समान विचारों में से आज हम मात्र सशस्त्र क्रांतिकारी रिश्ते को देखेंगे।

यह रिश्ता भी एकतरफा नहीं था। वीर सावरकर को भी अपनी अगली पीढ़ी में जन्मे भगत सिंह पर गर्व था। विकृत और इतिहास को तोड़ मरोड़कर पेश करने वाले चिल्लाते हैं कि सावरकर जी ने भगत सिंह की फांसी को रोकने की कोशिश नहीं की, चुप्पी साधे रहे, लेकिन इतिहास साक्षी है कि यह कोशिश सावरकर नहीं कर सकते थे क्योंकि उस समय वह स्वयं ही अंग्रेजों के बंधक थे और रत्नागिरी में बंद थे। 23 वर्षीय सावरकर जी के प्रभाव से हरनाम सिंह, भाई परमानंद, लाला हरदयाल, मदनलाल ढिंगरा, बैरिस्टर आसफ अली जैसे अनेकों युवक सशस्त्र क्रांति से जुड़े। इतना ही नहीं वीर सावरकर को पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करने वाले बैरिस्टर सरदार सिंह राणा व श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी सावरकर के हाथों सशस्त्र क्रांति की प्रतिज्ञा ली थी। सावरकर द्वारा स्थापित फ्री इंडिया सोसाइटी से ये सब जुड़े हुए थे। इस सोसाइटी ने अक्टूबर 1908 में भगत सिंह के चाचा व सशस्त्र क्रांतिकारी सरदार अजित सिंह का अभिनंदन किया था। इसका उल्लेख सावरकर जी ने अपनी पुस्तक में किया है। इसका अर्थ सावरकर व भगत सिंह के परिवार का रिश्ता पहले से दिखाई पड़ता है, जो भगत सिंह के बलिदान के बाद भी कायम रहा। सावरकर द्वारा लंदन में किया गया कार्य इतना अनूठा व गहरा था कि रासबिहारी बसु, मानवेंद्रनाथ राय जैसे क्रांतिकारी नेता सावरकर से प्रभावित हो उनका गुरुत्व स्वीकार चुके थे। सावरकर से दीक्षित लाला हरदयाल व पं.परमानंद से प्रभावित होकर गदर के हजारों युवा, सावरकर के नक्शे कदम पर चलने लगे। उनमें से एक थे, करतार सिंह सराबा ।

वह गदर के संपादन विभाग में कार्यरत थे और बाद में गदर आंदोलन के शीर्ष नेता बने । करतार सिंह ने भारत लौटकर प्रथम विश्व युद्ध में, सैन्य विद्रोह फैलाने का प्रयोग किया था। यह सावरकर के स्वातंत्र्य समर ग्रंथ का प्रत्यक्ष प्रयोग था, जिसमें करतार सिंह, रासबिहारी बसु व पंडित परमानंद के साथ जुड़ गए थे। उल्लेखनीय है, ये दोनों सावरकर से पूर्ण रूप से प्रभावित थे। इन्हीं के साथ रहकर भगत सिंह सशस्त्र क्रांति के लिए मैदान में उतर पड़े। स्वयं भगत सिंह सावरकर से मिलने रत्नागिरि गए थे। ऐसा उल्लेख क्रांतिकारी वामन चव्हाण अपने संस्मरणों में करते हैं। भगत सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियां बढ़ गई थीं । उसमें और गहराई आने लगी। उसी के चलते उन्होंने सावरकर की प्रयोग सिद्ध पुस्तक स्वातंत्र्य समर का तीसरा भाग प्रकाशित किया। इस पुस्तक से भगत सिंह काफी प्रभावित थे। वह वीर सावरकर के चरित्र एवं साहित्य का बारीकी से अध्ययन कर चुके थे।

अन्याय रोकने के लिए हथियार उठाने वाले भगवान परशुराम

जितेन्द्र जाखेटिया

अक्षय तृतीया के रूप में पहचानी जाने वाली वैशाख मास की तृतीया पर ऋषि भृगु के बेटे जमदग्नि के घर पर पुत्र का जन्म हुआ। इस पुत्र को रामभद्र नाम दिया गया। रामभद्र ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मां रेणुका और पिता जमदग्नि के पास अर्जित की। उसके पश्चात औपचारिक शिक्षा महर्षि विश्वामित्र तथा महर्षि ऋचिक से प्राप्त की। इस शिक्षा प्राप्त करने के दौरान अपने कौशल और आज्ञाकारित के कारण उन्हें उनके गुरु ऋचिक ने दिव्य धनुष सारंग दिया। इसके साथ ही महर्षि कश्यप ने वैष्णवी मंत्र दिया। इसके पश्चात् रामभद्र नाम के इस बालक ने भगवान शिव की तपस्या की। इस तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव के द्वारा विदुयदभि याने कि परशु (फरसा) दिया गया। भगवान विष्णु के छठे अवतार के रूप में जन्म लेने वाले इस बालक का नाम परशु प्राप्त करने के बाद परशुराम हो गया। घर पर प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ही माता पिता की आज्ञा मानने और उनके आदेशानुसार कार्य करने के कारण उन्हें उनके पिता से ही कई दिव्य अस्त्र और ज्ञान प्राप्त हुआ था। बाद में उन्होंने अष्ट सिद्धि पुराण उपनिषद और चार वेदों के ज्ञाता के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्हें पृथ्वी कल्प पर्यत रहने का वरदान प्राप्त है।

धर्म ग्रन्थ में मौजूद उल्लेख के अनुसार अश्वत्थामा, राजा बलि, महर्षि वेदव्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, भगवान परशुराम और ऋषि मार्कण्डेय अमर बताए गए हैं। यह वरदान भगवान परशुराम सहित 7 महापुरुषों को ही मिला है। यह भी एक कथानक है कि अपने पिता के आदेश पर भगवान परशुराम के द्वारा अपनी माता रेणुका की हत्या कर दी गई थी। कथानक के अनुसार पिता के आदेश का पालन करने पर प्रसन्न हुए पिता ने जब परशुराम से वर मांगने के लिए कहा तो उन्होंने अपने पिता से वर के रूप में अपनी माता को ही पुनः पुनर्जीवित करने का आग्रह किया था। इस घटना के बाद पिता के आदेश पर भगवान परशुराम तीर्थयात्रा के लिए रवाना हो गए थे। इसी दौर में तपस्या करके 1000 हाथ प्राप्त कर लेने वाले सहस्त्रार्जुन के अत्याचार बढ़ गए थे। अभिमान में डूबे हुए सहस्त्रार्जुन के द्वारा परशुराम के पिता जमदग्नि की हत्या कर उनके आश्रम से कामधेनु गाय प्राप्त कर ली गई थी। इस बात की जानकारी जब तीर्थयात्रा पर गए परशुराम को मां रेणुका के माध्यम से प्राप्त हुई तो वे अपनी यात्रा से वापस लौट कर आए। उसके बाद उनके द्वारा अन्याय रोकने के लिए हथियार उठाकर 21 बार क्षत्रिय समाज का वध किया गया। उस समय भी उन्होंने किसी गर्भस्थ शिशु अथवा किसी छुपे हुए व्यक्ति पर अपने हथियार का प्रहार नहीं किया। उस समय फिर कश्यप मुनि के द्वारा आदेश देने पर वे पृथ्वी छोड़कर महेंद्र पर्वत पर तपस्या करने के लिए चले गए थे। उसी समय से परशुराम जी को भगवान के रूप में पूजा जाता है ।

यह किंवदंती है कि उनके द्वारा एक बाण छोड़कर समुद्र की सीमा को पीछे कर दिया गया। इससे रिक्त हुई भूमि पर आज राज्य बसे हुए हैं। उनके द्वारा कई गांवों का विकास किया गया। नारी सम्मान के लिए उन्होंने ऋषि अत्री की पत्नी अनुसूया, अगस्त्य मुनि की पत्नी लोप मुद्रा के साथ मिलकर कार्य किया। हमेशा अन्याय को होने से रोकने और वैदिक संस्कृति के प्रचार को महत्व दिया। भगवान शिवजी से उन्हें दुर्लभ युद्ध कला कलारिपयट्टू की शिक्षा भी प्राप्त थी। भगवान परशुराम और रावण के पुत्र इंद्रजीत के पास ही सबसे खतरनाक अद्वितीय और शक्तिशाली अस्त्र ब्रह्मांड अस्त्र, वैष्णव अस्त्र और पशुपत अस्त्र मौजूद थे। इन अस्त्रों का प्रयोग उनके द्वारा हमेशा अन्याय के नाश के लिए ही किया गया। भगवान परशुराम ने पृथ्वी पर यह संदेश दिया है कि यदि अन्याय बढ़ रहा है और मानवता की रक्षा करना है तो उसके लिए एक ब्राह्मण को भी हथियार उठाना चाहिए। उनके द्वारा जब भी अत्याचारियों पर हथियार से प्रहार किया गया तो मुक्त हुई जमीन को ब्राह्मणजनों को दे दिया गया ।

भगवान परशुराम के द्वारा अपने कार्यों के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि अन्याय को किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए। मानवता की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। अन्याय करने वालों को पहले शास्त्र के माध्यम से समझाएं लेकिन यदि शास्त्र काम नहीं आ रहे हैं तो फिर आवश्यकता के अनुसार शस्त्र उठाने से भी परहेज नहीं करना चाहिए। सत्य की रक्षा के लिए हमें क्रोध आना आवश्यक है। हमें जाति का नहीं बल्कि असत्य और दुर्गुण का विरोध करना चाहिए। हमें अपने आपमें अन्याय के खात्मे के लिए शस्त्र उठाने का साहस पैदा करना होगा। निश्चित तौर पर महर्षि परशुराम के द्वारा दिया गया यह संदेश जब तक पृथ्वी है तब तक अन्याय करने वालों के संहार करने का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। ऐसा माना जाता है कि भगवान परशुराम का जन्म सतयुग में हुआ। वे त्रेतायुग, द्वापरयुग में मौजूद रहे और इस कलयुग के दौर में भी वह इसी पृथ्वी पर तपस्यारत हैं।

सशक्त होती नारी, लुप्त होती नारीसुलभ लज्जा..

एड. राजेश्वरी भट्ट, बुरहानपुर

लज्जा स्त्री का सर्वोत्तम प्रकृतिप्रदत्त गहना है। अप्रकट अंतर्भावना, नम्रता, संकोची मनोवृत्ति, संस्कारमय, शालीनता से परिपूर्ण लज्जा स्त्री का प्राकृतिक गुण, आज दुर्लभ है। आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति और शिक्षा विस्तार ने नारी वर्ग को जागृत कर, नारीसुलभ लज्जा को लुप्त कर दिया है। विद्यमान समय में लज्जा का स्थान स्वतंत्र जीवन, उन्मुक्त विचार और स्वच्छंदता ने अधिगृहीत कर लिया है।

यहां लज्जा को मात्र वस्त्रों से आंकना उचित नहीं होगा और न ही मेरा यह मानना है कि स्त्री का, हाथ भर घूंघट या गज भर साड़ी में लिपटा होना ही उसकी लज्जा या मर्यादा का प्रतीक है। लज्जा का आकलन आपकी मर्यादित वेशभूषा, भाषा, आचरण और व्यवहार से भी होता है। आज की नारी चारदिवारी के भीतर सिमटी नारी नहीं है अपितु पृथ्वी से अंबर को नापने वाली, साहस, बौद्धिक क्षमता और पर्वत जैसे अडिग निश्चय से युक्त है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां नारी ने सफलता का परचम न लहराया हो। भारतीय नारी ने विश्व में अपनी योग्यता के बल पर स्वयं को प्रतिष्ठित किया है। उनकी सफलता गौरवान्वित करती है परंतु क्या भारतीय नारी, आधुनिक युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हुए भारत की संस्कृति और सभ्यता को भी गौरवान्वित रख पाई है?

समय बदला, विचार बदले और नारी के आर्थिक स्वावलम्बन ने उसकी स्वतन्त्रता को स्वच्छन्दता में बदलना शुरू कर दिया और युवतियों ने कहा 'सुना है लज्जा स्त्रियों का गहना है, पर अफसोस हमें गहनों का शौक नहीं।' आर्थिक सक्षमता, पश्चिमी अनुकरण, उच्च शिक्षा से, नारी समाज में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन ने, कहीं न कहीं उन्हें निरंकुश और अहंकारी बना दिया। वह अब सदियों की दासता को पुनः स्वयं पर हावी नहीं होने देना चाहती। मेरा जीवन, मेरा निर्णय रूप की वाहवाही, बिंदास अभद्र भाषा का प्रयोग, अर्धनग्न वस्त्र, मदिरापान करती सड़कों पर अमर्यादित आचरण करने से भी नहीं चूकती और यही नहीं, आज की नारी को सोशल मीडिया ने इतना मुखर बना दिया है कि जो नारी कभी स्वयं अपशब्दों का सुनना पसंद नहीं करती थी वही आज सार्वजनिक मंचों पर धड़ल्ले से नारी जाति को अपमानित करते, अपशब्दों जिन्हें सामान्य भाषा में गाली कहा जाता है, से पुरुषों को सम्मानित करती हैं और बेबाक होना शान समझती हैं। क्या वास्तव में आप नारी के ऐसे स्वरूप का समर्थन करेंगे? ऐसी क्रांति, जिसके परिणाम, परिवार, समाज, देश, संस्कृति के विरुद्ध हों, वह स्वीकार्य हो सकते हैं? हमारे देश में क्रांतिकारी वीरांगनाओं की कमी नहीं अगर आदर्श मानना है तो उन्हें मानिए।

महिलाएं किसी भी समाज का संवेदनशील विषय रही हैं। समाज का आकलन, समाज में स्त्रियों की दशा पर निर्भर होता है। स्त्रियों के प्रति समाज की दृष्टि और व्यवहार उस समाज के वास्तविक चरित्र को रेखांकित करते हैं। पुरुष पुरातन काल से प्रतिस्पर्धी, आक्रोशपूर्ण, आधिपत्य जमाने वाले होते हैं। नारी, संवेगात्मक, शान्त, सामाजिक और कोमल स्वभाव की होती हैं इसलिए वे भावनाओं को उचित प्रकार से व्यक्त भी कर सकती हैं और समझ भी सकती हैं। परंतु अब ऐसा क्या हो गया है कि नारी, इस प्रकृति प्रदत्त स्वभाव का त्यागकर अपना सम्मान खो रही है?

महत्वाकांक्षी होना चाहिए किंतु महत्वाकांक्षाएँ जब अपनी सीमाएँ लाँघ जाती हैं तब वह अहितकारी हो जाती हैं। अति महत्वाकांक्षी होना, नारी को अहंकारी और अव्यावहारिक बना रहा है। पश्चिमी संस्कृति को अपनाकर, निज संस्कृति की अवहेलना, बुद्धिमत्ता की निशानी नहीं है। भारतीय नारी को देश की गौरवशाली संस्कृति, सभ्यता और परंपरा का संवाहक होना चाहिए। नारी सशक्तिकरण पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है और लिखा जायेगा परंतु युवा पीढ़ी को दिशाहीन, असंख्य, अहंकारी और निरंकुश होने से बचाने के लिए सच का आईना दिखाते लेखन की भी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। हम भारतीय नारी ही अगर अपनी संस्कृति व संस्कारों को विस्मृत कर देंगी तो आने वाला भविष्य हमारे लिए ही पीड़ादायक हो जायेगा। फिर न बेटी संस्कारी रहेगी न ऐसी बहू मिलेगी। नारी विमर्श का उद्देश्य मात्र नारी को सशक्त करने हेतु ही नहीं होना चाहिए अपितु नारी स्वयं के साथ देश, समाज, परिवार को भी सशक्त कर पाए ऐसा होना चाहिए।

बोध कथा

कर्म प्रधानता का महत्व

एक वैद्य गुरू गोविन्द सिंह के दर्शन हेतु आनन्दपुर गया। वहाँ गुरूजी से मिला और गुरूजी ने उन्हें आज्ञा दी कि जाओ और जरूरतमंदों की सेवा करो।

वापस आकर वह रोगियों की सेवा में जुट गया। शीघ्र ही वह पूरे शहर में प्रसिद्ध हो गया। एक बार गुरू गोविंद सिंह स्वयं उसके घर पर आए। वह बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन गुरूजी ने कहा कि वे कुछ देर ही ठहरेंगे। तभी एक व्यक्ति भागता हुआ आया और बोला-वैद्य जी, मेरी पत्नी की तबियत बहुत खराब है। जल्दी चलिए अन्यथा बहुत देर हो जायेगी। वैद्य जी असमंजस में पड़ गए। एक ओर गुरू थे, जो पहली बार उनके घर आये थे। दूसरी ओर एक जरूरतमंद रोगी था। अंततः वैद्यजी ने कर्म को प्रधानता दी और इलाज के लिए चले गए। लगभग दो घण्टे के इलाज और देखभाल के बाद रोगी की हालत में सुधार हुआ। तब वे वहाँ से चले, उदास मन से उन्होंने सोचा कि गुरूजी के पास समय नहीं था। अब तक तो वे चले गए होंगे फिर भी वैद्य जी भागते हुए वापस घर पहुँचे। घर पहुँचकर उन्हें घोर आश्चर्य हुआ। गुरूजी बैठे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वैद्यजी उनके चरणों पर गिर पड़े। गुरू गोविंद सिंह जी ने उन्हें गले से लगा लिया और कहा- तुम मेरे सच्चे शिष्य हो। सबसे बड़ी सेवा जरूरतमंदों की सहायता करना है।

यहां तीन पतंग है। हर पतंग के हर खाने में कुछ अक्षर दिए गए हैं। उनकी सहायता से तीन अक्षर वाले चार सही शब्द बताइए।

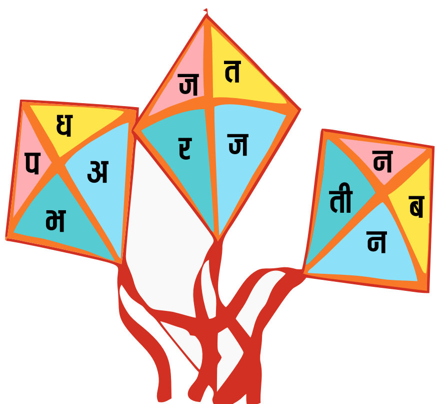

उत्तर - पतन, अजब, धरती, भजन

उठो उठो देखो हुई गी भोर

राजेन्द्र जोशी 'पुष्प'

उठो-उठो देखो हुई गी भोर।
तमारे उठाय तमारी काळजा री कोर।

दन उगता उषा राणी आई
सूरज की किरणां मन भाई
बोले कोयल नाचे मोर
उठो -उठो देखो हुई गी भोर।

मंदिर में बजी घड़ियाळ
चौपाया लई चल्या गुवाळ
देवरजी ने छोड़्या ढोर
उठो-उठो देखो हुई गी भोर।

पणिहारी पनघट पे जई री
देखो कसी परभाती गई री
पन्छिड़ा करिर्‌या हे शोर
उठो-उठो देखो हुई गी भोर।

पाड़-पड़ोसी सगळा जाग्या
अपणां-अपणां कामे लाग्या
सूता कंई म्हारा सिरमोर
उठो-उठो देखो हुई गी भोर।

फसळां खेतां में लइरईरी
बासन्ती सन्देशो दई री
सरवरिया में उठे हिलोर
उठो-उठो देखो हुई गी भोर।

भविष्य का आहार -मिलेट्स - मोटा अनाज

अशोक वर्मा

मिलेट्स का अर्थ है विभिन्न प्रकार के बाजरे या तृण धान्य। प्राचीन काल से उपजाये जाने वाले छोटे गोल अनाज को मिलेट्स या मोटा अनाज कहते हैं। मिलेट्स ही हमारे देश के मुख्य खाद्यान्न थे। हमारे पूर्वज इन्हीं धान्यों को खाकर स्वस्थ और लंबा जीवन जीते थे। आधुनिकता के प्रभाव में इन अनाजों को गरीबों का भोजन मान लिया गया, परिणाम इनकी खेती कम होती चली गई। मोदीजी की इच्छा से भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ को प्रस्ताव दिया था कि सन् 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष घोषित किया जाए। संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रस्ताव को मानकर सन् 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष या मिलेट्स इयर घोषित किया है। इसके अन्तर्गत दुनिया भर की सरकारें मिलेट्स उत्पादन और सेवन के लिए लोगों को जागरूक कर रही हैं, इसको खाने के लाभ बता रही हैं। केंद्र और राज्यों की सरकारें भी मिलेट्स को लेकर विशेष अभियान चला रही हैं। इनके उत्पादन और प्रोसेसिंग के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रही हैं, बेचने के लिए किसानों को बाजार उपलब्ध कराये जा रहे हैं। अभी विश्व में मिलेट्स का 41 प्रतिशत उत्पादन भारत में हो रहा है, एवं 18 प्रतिशत निर्यात कर रहे हैं।

हमारा देश मिलेट्स उत्पादन एवं निर्यात दोनों में ही विश्व में पहले स्थान पर है । हमारे यहाँ की भूमि और जलवायु मिलेट्स की खेती के लिए अनुकूल होने के कारण सरकार का प्रयास है इसके उत्पादन को बढ़ाया जाये। देश में भी खपत बढ़े और निर्यात बढ़कर विदेशी मुद्रा अर्जित की जाए। विश्व में लगभग 16 प्रकार के बाजरे पाये जाते हैं जिसमें से 8 प्रकार के बाजरे या मिलेट्स स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष उपयोगी हैं । **इनके नाम हैं ज़ुवार, बाजरा, रागी, कोदो,कुटकी, कंगनी, सावां, छोटी या हरी कंगनी हैं ।**

इनका ग्लाइसेमिक इन्डेक्स गेहूं और चावल की तुलना में बहुत कम होता है अर्थात मिलेट्स पाचन के दौरान धीर-धीरे टूटते हैं तो रक्तप्रवाह मे शुगर धीरे-धीरे जाती हैं। जिससे ब्लड शुगर नियंत्रित रहती हैं । इनमें फायबर प्रचुर मात्रा में होता है। साथ ही शरीर के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व होते हैं। इनके सेवन से व्यक्ति स्वस्थ रहता है । अपने देश के डॉ. खादरवली ने मिलेट्स पर बहुत अनुसंधान किया है इसलिए उन्हें **मिलेटमेन** कहा जाता है। उन्होंने पांच मिलेट्स कोदो, कुटकी, कंगनी, सावां तथा छोटी कंगनी और कुछ काढ़ों के सेवन का विशेष क्रम तैयार किया है साथ ही थोड़ी दवाइयों से हृदयरोग, मधुमेह, उच्चरक्तचाप, मोटापा, थाइराइड, पेट के रोग, त्वचा रोग, बांझपन, कैंसर जैसे कई रोगों के सैकड़ों मरीजों को ठीक किया है। स्वास्थ्य की दृष्टि से गेहूं और चावल की तुलना में मिलेट्स श्रेष्ठ खाद्यान्न हैं। इनके कई तरह के व्यंजन बनाकर खाये जाते हैं। ज़ुवार और बाजरे की रोटियां बनाकर सभी खाते ही हैं। बाकी के मिलेट्स को 6 घंटे पानी में गलायें, फिर कपड़े पर सुखाकर मिक्सी में या चक्की में पीसकर आटा बना लें। इस आटे से रोटी, इडली, डोसा, पूरी, चकली, हलवा, लड्डू जैसे कई तरह के व्यंजन बनाकर खाये जा सकते है। इनकी दालों या सब्जियों के साथ स्वादिष्ट खिचड़ी बनाई जाती हैं । फिलहाल 150 से 250 रु. तक मिलेट्स ऑनलाइन बेचा जा रहा है। आने वाले समय में मिलेट्स की मांग बढ़ने वाली है।

हमारे प्रदेश की जलवायु मिलेट्स या तृण धान्य की खेती के लिए बहुत ही उपयुक्त है । ये मूलतः मानसूनी फसलें हैं जून-जुलाई में बोई जाती हैं। सितंबर के अंत में या अक्टूबर में पककर तैयार हो जाती हैं। गर्म जलवायु की फसल होने के कारण गर्मी में भी उगाई जा रही हैं। कम उपजाऊ भूमि हो या बंजर, रेतीली हो या अम्लीय भूमि, हर तरह की जमीन में इनकी खेती होती है। पहाड़ी या मैदानी दोनों क्षेत्रों में समान रूप से पैदा हो सकते हैं ।

कम वर्षा तथा विविध जलवायु में भी तृणधान्यों का उत्पादन किया जा सकता हैं। कीट रोधी होने के कारण रासायनिक कीट नाशकों की जरूरत नहीं होती है। पानी भी कम लगता है। इन सब कारणों से मिलेट्स को **श्री धान्य** कहते हैं। मिलेट्स की खेती देशी गाय आधारित प्राकृतिक तरह से की जाये तो बहुत ही कम लागत में उच्चस्तरीय उत्पादन किया जा सकता है तथा रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों पर धननाश से बचा जा सकता है। तृणधान्यों से पशुओं के लिए बेहतर चारा भी प्राप्त होता है। जागरूक किसानों को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में विभिन्न मिलेट्स की खेती कर अनुभव लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए। देशी धान्य मिलेट्स अर्थात बाजरों का भविष्य उन्नत है। कम लागत, कम पानी में किसान इनकी खेती कर अपनी आय बढ़ा सकते हैं ।

मालवा की समृद्ध भोजन परंपरा

डॉ. बालाराम परमार

कहावत है कि **'भूख बापड़ी खाए सूखी पापड़ी'**, किंतु मालवा के विषय में भूख जैसा कुछ नहीं क्योंकि मालवा अंचल प्रारंभ से ही पोषण और भोजन की अभिरुचि से संपन्न रहा है। मानव का खानपान, रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार और जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार वहां की जलवायु, भूमि की बनावट तथा कृषि पद्धति निर्धारित करती है। मालवा एक पठारी भू-भाग है और यहां प्रमुख रूप से काली मिट्टी पाई जाती है जो कि मोटे अनाज के लिए विश्व प्रसिद्ध है। मालवा क्षेत्र में प्रमुख रूप से मक्का, ज्वार, बाजरा, तूवर, मूंग, उड़द, चंवला, साल (शालि या धान चावल), गेहूँ, चना, मूंगफली, सरसों आदि फसलों को उगाया भी जाता है फलतः मालवा के घर-घर में इन्हीं खाद्य पदार्थों से स्वादिष्ट और पोषणयुक्त व्यंजन बनाए जाते हैं।

मालवा में मुख्य रूप से दाल-बाटी-चूरमा, दाल-बाफला-लड्डू, दाल-पानिया, मक्का, ज्वार, बाजरे ओर गेहूं की रोटी, गजकड़ा (मोटी रोटी), पूरी (तेल में तलकर बनी), गेहूँ-चने की मिस्सी रोटी आदि खाने का प्रचलन है। यहां के लोग रोटी, बाटी, बाफले आदि पर ढेर सारा शुद्ध देशी घी डालकर भोजन करते हैं। दाल बाटी के प्रचलन का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि यहां के युवाओं ने इसको लेकर एक उद्घोष ही बना दिया है, **"दाल-बाटी-चूरमा, मालवा वाले सूरमा।"** मालवा में मक्का के भुट्टे, ज्वार के डोडे, गेहूं की उम्बी, गीले चने के होले, सूखी मक्का की धानी, सूखे चने के भूंगडे आग में सेंककर भी खाए जाते हैं। मालवा में अनाज और दालों को पानी में उबालकर उनकी घुघरी बनाकर खाने की परंपरा भी प्रचलित है। ज्वार-बाजरा-मक्का की राबड़ी और गेहूँ के आटे और चने के बेसन से तवे पर तले हुए रेलमे (चिकारे) भी मालवा के पारंपरिक व्यंजन हैं। भुट्टे (मक्का) का कीस, लड्डू और कचोरी की प्रसिद्धि इतनी ज्यादा है कि हाल ही में हुए प्रवासी भारतीय सम्मेलन में 68 देशों के मेहमानों को तथा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को भोजन में भुट्टे का कीस परोसा गया।

संभवतः मालवांचल में बेसन का प्रयोग सबसे ज्यादा किया जाता है, बेसन गट्टे, भजिये, सेंव, पपड़ी, आलूबड़ा, बूंदी के लड्डू, बेसनचक्की, कड़ी, खाटा और बेसन की सब्जी, पापड़ इत्यादि बनाने में भी उपयोग किया जाता है। इसके साथ ही चने, मूंग, ज्वार, चावल, उड़द, गेहूं आदि से पापड़ और लड्डू भी बनाए जाते हैं। भोजन के साथ पत्थर के सिलबट्टे पर बनी हरे धनिए, टमाटर, अमरूद, कच्चा आम, कबीट आदि की चटनी खाई जाती है जो स्वादिष्ट तो होती ही है भोजन को पचाने में सहायक भी होती है।

मालवा क्षेत्र में प्रकृति माता की कृपा से प्रचुर मात्रा में हरी साग भाजी उपलब्ध है अतः यहां मेथी, पालक, खाटी भाजी, चन्दरोई, चीलभाजी, अफीम की भाजी आदि हरी पत्तेदार साग और फूलगोभी, पत्तागोभी, कद्दू, कटेर, किकोड़े, टिंडोरी, भिंडी, गिलकी, तरोई, टिंडा, मूली, आलू, परवल, करेला आदि सब्जियों का नियमित सेवन किया जाता है। भोजन में उड़द, मूंग, तूवर, चँवला, मसूर आदि दालें और दूध, दही, छाछ, छाछ की कड़ी और खाटा भी नियमित खाया जाने वाला व्यंजन है। लापसी (मीठी थूली), हलवा, मालपुए, जलेबी, मोतीचूर के लड्डू, चूरमा, खीर, सीरा आदि मालवा की प्रसिद्ध पारंपरिक मिठाईयां हैं, जबकि दूध से निर्मित मिठाईयों का प्रचलन भी अब बहुत बढ़ गया है।

कुल मिलाकर मालवा में भोजन खाने-खिलाने की एक समृद्ध परंपरा रही है, यहां के समाज ने अपने भोजन में स्वाद के साथ-साथ पोषण को भी सम्मिलित किया। मालवा क्षेत्र में सामान्यतः स्त्रियों द्वारा भोजन निर्माण किया जाता है, वह अपनी रसोई की स्वच्छता का भी विशेष ध्यान रखती हैं और घर में सबको भोजन करवाकर अंत में स्वयं भोजन करती हैं। हालांकि समय, परिस्थिति तथा वैज्ञानिक प्रौद्योगिक उन्नति इस पारंपरिक भोजन पद्धति में थोड़ा बहुत परिवर्तन करती रहती है। मोटे अनाजों को छोड़कर लगभग 80 प्रतिशत लोग अब सिर्फ गेहूं खा रहे हैं, इसी प्रकार मूंगफली, तिल, सरसों आदि के स्थान पर सोयाबीन के तेल का सेवन किया जाने लगा है। प्रेशर कुकर, माइक्रोवेव, इलेक्ट्रिक अवन, मिट्टी के बर्तनों के स्थान पर धातु (खासकर एल्यूमिनियम) ने ले लिया है, इन सबका प्रभाव व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर देखने को मिलता है।

(लेखक केंद्रीय विद्यालय संगठन के सेवानिवृत्त प्राचार्य एवं एज्युकेशन फॉर पीस एंड इनोवेटिव प्रैक्टिसेज इन क्लासरूम टीचिंग पुस्तक के लेखक हैं।)

समरसता का प्रतीक -तिवड़िया गांव

अमन व्यास

ये देवास जिले का अंतिम गांव है, तिवड़िया नाम है। गांव बारेला समाज का है, मने जनजातीय गांव है।

जनजातीय गांव है तो सबसे पहले गिद्ध दृष्टि पड़ी मिशनरी महोदय की। मिशनरियों के पास्टर और नन पेंठ बनाने के प्रयास करने लगे। संडे की गिरिजाघर की प्रार्थना में आने और उसके कारण दुःखों को भगाने की बात कहने लगे। लेकिन अपनी जड़ों से मजबूती से जुड़े इस गांव के एक भी व्यक्ति की अपने धर्म के प्रति निष्ठा को वे थोड़ा भी नहीं हिला सके, ग्रामीणों ने उन्हें सादर विदा किया, जैसे हिन्दू करता है।

2010 के आसपास का समय होगा, ग्रामीण नशे में धुत्त रहते, देव प्रथाओं में शराब की अनिवार्यता का अवैधानिक लाभ उठाया जाता, नालियों -सड़कों में पड़े लोग मिल जाते या मदिरा के प्रभाव से लोगों को अनाप - शनाप गालियां बकते लोग। गांव में **'सेवा भारती'** पहुंची, कुछ बैठकें हुई और भागवत जी कराने की योजना बनीं। योजना में यह भी तय हुआ कि जब तक भागवत जी चले तब तक कोई शराब नहीं पीएगा, कुछ अपवादों को छोड़ दें तो गांव में किसी ने शराब नहीं पी थी। यहीं से गांव के दिन बदलना प्रारंभ हुए, ग्रामोदय होने लगा। भागवत जी प्रतिवर्ष होने लगीं, गांव में सेवा भारती संस्कारों के बीज बोने लगी और आज कुछ वृद्धों के अलावा कोई भी ग्रामीण शराब नहीं पीता।

सेवा भारती ने बच्चों के पढ़ने और गढ़ने की व्यवस्था की, महानगरों के छात्रावासों में भेजा और आज गांव के कई बच्चे उच्च पदों पर पदस्थ हैं। गांव के एक लड़के ने ऊंची डिग्रियां प्राप्त कीं और फिर सरपंच बन गांव की सेवा करने की ठानी, आज वो गांव को गांव बनाने में लगा है।

इस उदयकाल में **भगवतियां** कैसे पीछे रह सकती थीं, उन्होंने अपने समूह बनाए, भजनों के। भजन के समूह **स्वयं सहायता समूह** बन गए और आज ये देवियां अपने घरों में कुछ अच्छा करने में योगदान दे रही हैं, स्वयं को आत्मनिर्भर बना रही हैं। हमारी **फेमिनिज्म** की ओर आकर्षित बहिनों ने एक बार इन्हें देखना चाहिए तो समझ जाएंगी कि **नारी सशक्तिकरण** का सत्व क्या है।

गांव बारेला जनजाति का है, कुलदेवी **गुजरात** में बताई गई, तो गांव का गांव अपनी विस्मृत हो चुकी कुलदेवी को खोजने के लिए निकला। भगवती के दर्शन किए और आग्रह किया कि हम सब तिवाड़ियां में आ बसे हैं, आप भी आइए। मां के लिए एक ग्रामीण ने अपनी भूमि दान दे दी। मां मोगरा देवी आ जाएगी तो फिर **मेरा यीशु -यीशु** वाले इन्हें अपने मूल से काट नहीं पाएंगे। बच्चे पढ़ रहे है, ग्रामीण उद्यम कर रहे हैं, जिजाऊ अपने शिवबा को संस्कार दे रही हैं, **तिवड़िया** वैसा ही बन रहा है, जैसा भारत के गांवों को होना चाहिए, जिसके लिए कहा गया है **ग्रामोदय से राष्ट्रोदय।**

गांव शराबमुक्त सरकार की आबकारी नीति से नहीं हुआ, किसी विज्ञापन से प्रभावित होकर भी नहीं हुआ। वह शराबमुक्त और संस्कारयुक्त कुछ जीवनों के वहां खपने से हुआ है, अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति की इच्छा को तजकर किसी सामाजिक कार्यकर्ता ने अपने सुखों को त्याग कर इन गांवों में धूल छानी होगी। मिशनरियों के षड्यंत्रों से योजनापूर्वक कोई संगठन लड़ा होगा। इन्हीं ग्रामीणों की गालियां भी खाई होंगी, जो आज प्रशंसा करते नहीं थक रहे, तब जाकर एक दशक में इस गांव की तस्वीर कुछ संवर रही है।

देश सरकारों से नहीं बदलता। समाज बदलता है, कुछ लोग बदलते हैं जो खपते हैं, जीवन भर, **भारत मां का मान बढ़ाने को।**

गर्मियों में इन 10 बीमारियों के होने का खतरा ज्यादा, जानें लक्षण और बचाव

गर्मियों के मौसम में तेज धूप से हर कोई परेशान हो जाता है। ये मौसम अपने साथ कई बीमारियां भी लेकर आता है। गर्मियों की धूप का असर आपके शरीर, त्वचा, आंखों और पाचन तंत्र पर भी पड़ता है। इस मौसम में जरा सी लापरवाही आप पर भारी पड़ सकती है। आइए जानते हैं कि गर्मियों के मौसम में लोग किन बीमारियों की चपेट में आसानी से आ जाते हैं। साथ ही जानेंगे कि इन बीमारियों से कैसे बचा जा सकता है।

फूड प्वाइजनिंग- फूड प्वाइजनिंग गर्मियों की सबसे आम बीमारियों में से एक है। ये दूषित खाने या पानी की वजह से होता है। गर्मी और उमस की वजह से इस मौसम में बैक्टीरिया आसानी से पनप जाते हैं जिसकी वजह से खाना दूषित हो जाता है। इसकी वजह से पेट दर्द, मितली, दस्त या उल्टी होने लगती है। इससे बचने के लिए कच्चा मांस और सड़क किनारे मिलने वाली खुली चीजें खाने से बचें।

डिहाइड्रेशन- शरीर में पानी की कमी की वजह से डिहाइड्रेशन हो जाता है। गर्मियों में ये होना बहुत आम है लेकिन इसकी वजह से कुछ गंभीर समस्याएं भी हो सकती हैं, गर्मियों के मौसम में पसीने के जरिए शरीर से बहुत सारा पानी बाहर निकल जाता है। पानी की कमी से बॉडी सही तरीके से काम नहीं कर पाती है। इसलिए इस मौसम मे खूब पानी और जूस पीना चाहिए।

हीट स्ट्रोक- हीट स्ट्रोक यानी लू लगना गर्मियों की सबसे आम बीमारी है। ये बीमारी बहुत देर तक तेज धूप में रहने की वजह से हो जाती है। वैसे तो लू लगना बहुत बहुत आम है लेकिन अगर समय पर इसका इलाज नहीं किया गया तो ये जानलेवा भी हो सकती है। सिर दर्द, कमजोरी, बेहोशी और कुछ गंभीर मामलों में ऑर्गन फेल इसके खास लक्षण हैं। इससे बचने के लिए अपने शरीर को ठंडा रखें, खान-पान पर ध्यान दें, खूब सारा पानी पिएं और बॉडी को हमेशा हाइड्रेटेड रखें।

घेंघा- घेंघा को कंठमाला रोग भी कहते हैं। ये एक संक्रामक वायरल बीमारी है जो ज्यादातर गर्मियों के मौसम में होती है। इस बीमारी के सबसे ज्यादा शिकार छोटे बच्चे होते हैं। ये बीमारी पैरोटिड ग्रंथियां बढ़ जाने की वजह से होती है। इसकी वजह से गर्दन में सूजन, दर्द और बुखार रहता है। संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने से ये फैल सकता है।

चेचक- चेचक या चिकनपॉक्स भी गर्मियों की सबसे आम बीमारी में से एक है। पूरे शरीर में खुजली, फफोले, लाल दाग, तेज बुखार, भूख न लगना और सिर दर्द रहना इसके इसके सामान्य लक्षण हैं। इस बीमारी की चपेट में सबसे ज्यादा बच्चे ही आते हैं और इससे बचाव का सबसे सुरक्षित तरीका इसकी वैक्सीन लगवाना है।

खसरा- खसरा एक संक्रामक बीमारी है जो श्वसन संक्रमण की वजह से होती है। इसके शुरुआती लक्षण तेज बुखार, खांसी, नाक बहना, गले में खराश और आंखों का लाल हो जाना है। ये बीमारी बढ़ जाने पर रैशेज, दाने और मुंह के अंदर छोटे सफेद धब्बे हो जाते हैं। ज्यादातर मामलों में ये रैशेज चेहरे के आसपास देखे जाते हैं।

टाइफाइड- टाइफाइड भी एक ऐसी बीमारी है जो दूषित खानपान से होती है। इसके सामान्य लक्षण तेज बुखार, थकान, कमजोरी, पेट में दर्द, सिरदर्द और भूख न लगना हैं। इससे बचने के लिए हमेशा साफ-सुथरा खाना खाएं। खासतौर से पानी हमेशा साफ पिएं।

सनबर्न- सनबर्न तेज धूप में बहुत देर तक रहने की वजह से हो जाता है। इसकी वजह से त्वचा की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचता है और स्किन पर दर्दनाक चकत्ते हो जाते हैं। इससे स्किन कैंसर का खतरा भी बढ़ जाता है। इससे बचाव के लिए धूप में बहुत देर तक रहने से बचें। पूरे बाजू के कपड़े पहनें और बाहर जाने से पहले सनस्क्रीन जरूर लगाएं।

घमौरी- गर्मियों में पसीने की वजह से घमौरी होना बहुत आम है। इसमें शरीर पर लाल या गुलाबी दाने होने लगते हैं। ये खासतौर से शरीर के उन हिस्सों में होता है जो कपड़े से ढके रहते हैं। घमौरियां छोटे बच्चों को बहुत जल्दी हो जाती हैं इसकी वजह से त्वचा में पूरे समय खुजली होती रहती है।

गर्मियों में होने वाली अन्य बीमारियां- इन सबके अलावा डायरिया, पेचिश और हैजा जैसी बीमारियों की भी गर्मियों में होने की संभावना बढ़ जाती है। इन सबसे बचने के लिए अपने खानपान और साफ-सफाई पर जरूर ध्यान दें।

इंदौर में डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति ने आयोजित किया वरिष्ठ स्वयंसेवकों का एकत्रीकरण

डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति के माध्यम से प्रतिवर्ष समिति के स्थापना दिवस के अवसर पर इंदौर विभाग के ऐसे सभी वरिष्ठ संघ स्वयंसेवक जिनकी आयु 55 वर्ष से ऊपर है और जिनकी संघ आयु 40 वर्ष से अधिक है ऐसे सभी वरिष्ठ स्वयंसेवकों का पंतवैद्य कॉलोनी स्थित नारायणबाग संघ स्थान पर एकत्रीकरण आयोजित किया जाता है।

रविवार को आयोजित एकत्रीकरण में लगभग 800 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। संघ के वे स्वयंसेवक जिनकी आयु 90 वर्ष से ऊपर थी, उन सभी स्वयंसेवकों का अभिनंदन स्वागत किया गया, उसमें एक स्वयंसेवक 99 वर्ष के भी थे ।

बीते वर्ष में जिन स्वयंसेवकों का स्वर्गलोक गमन हो गया, उन्हें 2 मिनट की श्रद्धांजलि दी गई। मंच पर समिति के अध्यक्ष श्री ईश्वर जी हिंदुजा, समिति के उपाध्यक्ष विभाग संघचालक श्री शैलेन्द्र जी महाजन, क्षेत्र कार्यवाह श्री अशोक जी अग्रवाल थे। उद्बोधन श्री अशोक जी अग्रवाल का प्राप्त हुआ, उन्होंने सभी वरिष्ठ स्वयंसेवकों से आग्रह किया कि कुटुंब प्रबोधन को लेकर, पर्यावरण को लेकर, सामाजिक समरसता के लिए अधिक से अधिक सामाजिक लोगों को जोड़कर कार्य करें ।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में जो प्रस्ताव पास हुए उनके बारे में विस्तृत रूप से उल्लेख किया गया।

इंदौर में हुई दुर्घटना के बाद रा.स्व.संघ, सेवा भारती और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं की अनथक सेवा

इंदौर में श्रीरामनवमी के दिन बेलेश्वर मंदिर में बावड़ी में गिरने से लगभग तीन दर्जन श्रद्धालुओं की दुःखद मृत्यु हो गई है। कुछ श्रद्धालु अस्पताल में उपचाररत हैं।

जब इंदौर में यह घटना हुई तो तुरंत संघ, सेवा भारती और बजरंग दल के 150 से अधिक कार्यकर्ता राहत एवं बचाव कार्य के लिए दुर्घटना स्थल पर पहुंचे। बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने बचाव दल के साथ मिलकर भारी कार्य जैसे पाइप निकालना, बावड़ी से निकल रहे मलबे, पत्थरों और फर्शियों को व्यवस्थित बाहर निकालने, भीड़ को नियंत्रित करने जैसे कार्य किए। वहीं संघ के कार्यकर्ताओं व बजरंग दल ने मिलकर राहत एवं बचाव दल तथा श्रद्धालुओं के परिजनों के लिए अल्पाहार व चाय की व्यवस्था, अपनों की प्रतीक्षा में व्याकुल, परिजनों को ढांढस बनाने का कार्य किया। बावड़ी से निकल रहें शवों व घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाने के लिए भीड़ को नियंत्रित करने का कार्य संगठनों के कार्यकर्ताओं ने मिलकर किया तथा एमवाय अस्पताल में सभी तरह की उपचार व्यवस्था में सहयोग-समन्वय का कार्य सेवा भारती की इंदौर इकाई के कार्यकर्ताओं ने प्रतिपल किया। दुर्भाग्यवश जब मृत्यु का आंकड़ा बढ़ने लगा तो शमशान में जाकर संघ व सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने वहां की व्यवस्था संभाली। साथ ही इस प्रकार के वज्रपात को सहन करने का सामर्थ्य देने हेतु अथवा अपने परिजनों को इस तरह खोने के कारण दुःखी परिजनों को ढांढस बंधाने और अल्पाहार इत्यादि की व्यवस्था की। अभी भी कार्यकर्ता जहां आवश्यकता है, वहां सेवा को लगे हुए हैं।

एक ही परिवार के आठ सदस्यों की हुई घर वापसी

झाबुआ जेएनएन। गांव धामंदा के एक परिवार के आठ लोगों ने इस माह घर वापसी की। स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रलोभन में ये लोग नौ वर्ष पहले ईसाई बन गए थे। संत कमल महाराज व धर्म प्रसार विभाग के राकेश डामोर आदि की प्रेरणा से वापस सनातन धर्म में लौट आए। मतांतरण जिले की गंभीर सामाजिक समस्या है। इसे देखते हुए हिंदू संगठन विशेषकर विहिप घर वापसी अभियान चला रही है। घर वापसी करने सभी ग्रामीण गांव कोकावद के महादेव धाम आए। यहां उन्होंने विशेष पूजा-अर्चना की। संत कमल महाराज ने सभी को पूजा करवाई। इसके बाद हवन हुआ। जनजातीय क्षेत्र में लंबे समय तक सेवा दे चुके संत खूमसिंह महाराज की प्रतिमा पर नमन किया और सनातन धर्म स्वीकार किया।

भटक गए थे - विहिप के धर्म प्रसार प्रमुख आजाद प्रेमसिंह ने बताया कि सुबह का भूला यदि शाम को घर लौट आए तो इससे अच्छा कुछ नहीं होता। भोलेभाले आदिवासियों को झूठे प्रलोभन देकर मतांतरित करवा लिया जाता है, लेकिन वे अपनी जड़ों से दूर होकर सुखद महसूस नहीं करते। अपनी सभ्यता व संस्कार इन्हें हमेशा याद आते हैं। थोड़े से प्रयास करने पर ही वे फिर सनातन धर्म को अपना लेते हैं।

184 ग्रामीणों ने घर वापसी की थी - उल्लेखनीय है कि दिसंबर 2022 में कल्याणपुरा क्षेत्र के 184 ग्रामीणों ने एक साथ घर वापसी की थी। सभी ने पूजा-अर्चना करते हुए सनातन धर्म को अंगीकार किया था। इसके बाद कोकावद में दो ग्रामीणों ने पहुंचकर सनातन धर्म स्वीकार किया। अब आठ ग्रामीण आगे आए हैं। इस तरह से एक साल में 194 ग्रामीणों ने घर वापसी की है।

अपनी सभ्यता व संस्कृति याद आ रही थी - कैलाश पुत्र हेमराज, शुकली पत्नी कैलाश, दुर्गेश पुत्र कैलाश ने बताया कि नौ वर्ष पूर्व घर में बीमारी थी। हमें कहा गया कि ईसाई धर्म अपना लो, स्वास्थ्य सुविधाएं मिलेंगी। हम प्रलोभन में आकर ईसाई बन गए, लेकिन अपनी सभ्यता व संस्कृति याद आ रही थी। हमें समझ में आ गया कि सनातन धर्म ही सच्चा है, इसलिए घर वापसी की है। अब काफी अच्छा लग रहा है। इनके अलावा गोविंद पुत्र कैलाश, काली पुत्री कैलाश, मुकेश पुत्र कैलाश, मोनिका पुत्री कैलाश व अभिषेक पुत्र दुर्गेश ने घर वापसी की है। ये सभी एक ही परिवार के हैं।

सेवांकुर के माध्यम से सेवा का बीज सभी चिकित्सकों तक जाना चाहिए – माननीय राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल

सेवांकुर भारत संस्था का 'एक सप्ताह देश के नाम' यह उपक्रम गतवर्ष से देश के विभिन्न क्षेत्रो मे संपन्न हुआ है, इस वर्ष यह उपक्रम मध्यप्रदेश के झाबुआ शिवगंगा प्रतिष्ठान के परिसर में 23 मार्च से लेकर 29 मार्च तक संपन्न हुआ। इस उपक्रम के अंतर्गत देशभर से वैद्यकीय विद्यार्थी और चिकित्सक सात दिन वनवासी क्षेत्र का अनुभव लेते हैं और अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं। इस अनूठे उपक्रम का समापन समारोह मध्य प्रदेश के महामहीम राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल इनके द्वारा इंदौर स्थित रवींद्र नाट्यगृह में 29 मार्च को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जयंतीभाई भाडेसिया (पश्चिम क्षेत्र संघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ), श्री अशोक जी सोहनी (मध्य क्षेत्र संघचालक, रा. स्व. संघ) और श्री अशोक जी खंडेलवाल (व्हॉईस चान्सलर, इंदौर युनिव्हर्सिटी) मौजूद थे। मंच पर 'एक सप्ताह देश के नाम' इस उपक्रम के प्रमुख डॉ. राजेश पवार , सहप्रमुख डॉ. आरती रोजेकर और डॉ. किरण अल्हाट उपस्थित थे।

याशी ने कला के माध्यम से अनाथ बच्चों की लिए एकत्रित किया फंड

याशी चौधरी इंदौर एक कत्थक नृत्यांगना है। याशी पिछले 6 वर्षो से कत्थक की शिक्षा गुरु प्रतिमा झालानी जी से ले रही है। नृत्य में रुचि के कारण वो जल्दी से ही कत्थक में पारंगत हो गई।

याशी ने 10 वर्ष की आयु में 2 विश्व कीर्तिमान कत्थक में दर्ज करवाए हैं। याशी ने 24 जनवरी 2021 को एक मिनट में 110 कत्थक के चक्कर तथा उसी दिन 1 घंटे में 4290 कत्थक के चक्कर लगा कर ग्लोबल रिसर्च एंड फाउंडेशन में अपना नाम दर्ज करवाया। रिकॉर्ड बनाने के साथ ही उसने उस दिन ये प्रण लिया की वो अपनी कला के माध्यम से अनाथ बच्चों की लिए फंड एकत्रित करेगी।

कोविड महामारी में पिता को खो चुकी याशी ने अपने उस जज्बे को आगे रखा तथा 21 जुलाई 2021 को अपना पहला कत्थक चैरिटी शो वर्चुअल माध्यम से किया। इस शो से 30000 रूपए एकत्रित कर इंदौर की संस्था मातृछाया जो कि अनाथ बच्चों की देखभाल करती है को डोनेट किया।

इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए 14 नवंबर 2022 को बाल दिवस पर फिर से कत्थक चैरिटी शो किया तथा प्राप्त राशि को मातृछाया को डोनेट की। याशी ने अपना तीसरा शो 31 जुलाई को इंदौर के संतोष सभागृह में किया तथा शो से 27000 रुपए एकत्रित कर संस्था को डोनेट किए।

याशी ने अब तक कुल 71000 रूपए मातृछाया संस्था में डोनेट किए है। इसी के साथ याशी इंदौर के मालवा उत्सव मैं भी अपनी प्रस्तुति दे चुकी है। याशी आगे भी इसी तरह के शो करके अनाथ बच्चों की जितनी सहायता हो सकती है करना चाहती है।

प्रदेश का किया नाम रोशन
छोटे शहर का हरेंद्रसिंह तोमर बना अंतरराष्ट्रीय बास्केटबॉल खिलाड़ी

जावरा, हरेंद्र सिंह तोमर की खेल एवं शिक्षा के प्रति रुचि बचपन से रही। बास्केटबॉल में इस मुकाम पर पहुंचने के साथ ही उन्होंने बीई मैकेनिकल, एमबीए, स्पोर्ट्स कोचिंग एवं बीपीएड की शिक्षा भी ली। हरेन्द्र सिंह ने बताया कि मुझे इस मुकाम पर पहुंचने के पहले आर्थिक रूप के साथ कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। शिक्षा के साथ साथ खेल को जारी रखना कड़ा अभ्यास रहा।

हरेन्द्र सिंह तोमर ने हाल ही में भारतीय पुरुष बास्केटबाल दल का प्रतिनिधित्व करते हुए जॉर्डन में संपन्न हुई वर्ल्ड कप क्वालीफायर्स प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया। मध्यप्रदेश से लगभग 16 वर्ष के बाद किसी खिलाड़ी का चयन भारतीय दल में हुआ है।

हरेन्द्र सिंह तोमर शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रतिभावान रहे। उन्होंने बीई मेकेनिकल, एमबीए , बीपीएड (प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान के साथ), स्पोर्ट कोचिंग कोर्स की डिग्रियां प्रथम श्रेणी में रहकर उच्च स्थान पर रहकर प्राप्त कीं।

नर्मदा तट पर स्थित आदि शंकराचार्य गुफा – ओंकारेश्वर

भगवान परशुराम जन्मभूमि, जानापाव

मई माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०४ गुरू अमरदास जयंती
ता. ०७ रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती
ता. ०९ गोपाल कृष्ण गोखले जयंती
ता. १५ रामभक्त केवट जयंती
ता. २२ महाराणा प्रताप जयंती
ता. २८ वीर सावरकर जयंती

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341